चित्रःगूगल से साभार

बच्ची ही थी

बच्ची ही थी उस समय भी
जब शादी के मंडप पर बैठी थी
तब मेरे मन का कितना ख्याल
रखा गया था,
सूटकेस में भरे जा रहें थे
मेरे पसन्द के कपड़े गहने
दही चीनी खिलाकर विदाई दी गई थी कि
सब अच्छा व शुभ ही हो,
पिता व भाई हाथ जोड़े
कातर स्वर में एक बात दोहराते रहें
बच्ची है मेरी बहन,बेटी,
इसकी गलतियों को माफ करना,
बच्ची थी मैं....

बच्ची थी मैं,
मुझ से नहीं होती थी भूख बर्दाश्त
नहीं करती थी कोई व्रत-उपवास
मेरी पसन्द,मेरी प्राथमिकता में पहले दर्जे पर होता
यह जादू कब कैसे हुआ,
नहीं जान पाई,,,और चुपके से
मेरे अंदर से वो बालिका निकल गई
किसी रोज चुपचाप
न उसे आते देखा किसी ने,न जाते
अफसोस है कि उसकी विदाई पर
दही चीनी नहीं खिला पाई
नहीं दे पाई,उसके पसन्द की चीजें

उस लड़की के जाते ही
मैं अचानक से बड़ी हो गई
करने लगी व्रत उपवास
मांगने लगी मन्नत
पेट की आँतें सिकुड़ के छोटी हो गई
और दिन दिन भर आराम से
भूखे रहने की आदत हो गई

सूर्य देवता को अर्द्ध देना
तुलसी पर दिया लगाना
ये सब एक दिन मैं भी करुँगी
सपने में भी यह विचार न आया था कभी....
मैं आईना देखने लगती हूँ
कहीं मेरे अंदर,मेरी माँ तो नहीं उतर आई है...

प्रतिभा श्रीवास्तव अंश